INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 11 | DECEMBER - 2022

रीवा राज्य के बघेली लोक गीत का समीक्षात्मक अध्ययन

राजकुमार तिवारी[1] , डॉ. देवाशीष बनर्जी[2]
[1]शोधार्थी संगीत, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
[2]प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष संगीत, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

रीवा राज्य की कला–परम्परा वीरसिंह देव से प्रारम्भ होती है जो केवल वास्तु प्रेमी न होकर साहित्य के प्रबल आश्रयदाता भी थे। लोक साहित्य लोक जीवन का प्रतिबिम्ब होता है, जो गीत, कहानियों और पहेलियों के रूप में प्रत्येक समाज में विद्यमान रहता है। बघेली भाषा में जन्म, मुण्डन, जनेऊ और विवाह के समय यहाँ जो गीत गाये जाते हैं, वे वास्तव में शताब्दियों से पीढ़ी को हस्तान्तरित होने वाला लोक साहित्य है। इसी तरह देवीपूजा के गीत, कजली, झूला और खजुलइयाँ के गीत, डेढ़िया गीत, तुलसी के विवाह गीत, फाग और होली, बनरा, सोहाग, कलेवा, विदाई, सोहर, बधाव आदि त्यौहारों के गीत प्रचुर मात्रा में यहाँ प्रचलित है। राम–सीता के जीवन की कथायें, आल्हा–ऊदल की कहानी तथा बघेल राजपूतों के युद्ध एवं वीरता की कहानियाँ भी प्रचलित हैं। इस क्षेत्र में बघेली पहेलियाँ भी प्रचलित हैं जो अत्यन्त साधारण शब्दों में गूढ़ अर्थ प्रस्तुत करती है।

मुख्य शब्द – रीवा राज्य, बघेली लोक गीत एवं बघेली भाषा ।

प्रस्तावना –

बघेली भाषा इलाहाबाद तथा मिर्जापुर के दक्षिणी भाग में प्रचलित है, जिसका केन्द्र स्थान रीवा है। बघेली भाषा का लोक साहित्य सम्पन्न है। बघेली रामायन, परशुराम वार्ता, बघेली किशन कथा, बघेली भजन, बघेली गारी, बैजू की सूक्तियाँ, सैफू करे बात, काका कै बात आदि प्रसिद्ध बघेली रचनायें हैं। इस क्षेत्र में बैजू, सैफू, शंभू काकू आदि बघेली कवि के रूप में प्रसिद्ध हैं। रीवा में डॉ. भगवती प्रसाद शुक्ल ने बघेली भाषा में अनेक रचनायें की हैं। श्री जनार्दन प्रसाद पिड़िहा ने ठाकुर रणमत सिंह पर बघेली में खण्ड काव्य लिखा है। श्री निवास शुक्ल 'सरस' ने भी बघेली साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। बघेली भाषा का शब्दकोष उनकी महत्वपूर्ण रचना है। प्रोफेसर रामसुन्दर पाठक ने आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में रहकर बघेली भाषा में उच्च स्तरीय शोध कार्य किया है। बघेलखण्ड की लोक संस्कृति के रूप में मूलतः पायी जाती है। यहाँ की जनवादी संस्कृति में आदिम संस्कृति के तत्व पर्याप्त मात्रा में परिलक्षित होते हैं। गुदना कला यहाँ पुरातन काल से विद्यमान है। नारियाँ अपने अंगों पर मछली, कमल, तितली, मोर, चिड़िया, फूल–पत्ती, राधा–कृष्ण, सीता–राम आदि अंकित कराती हैं। बघेलखण्ड के ग्रामीण अंचल में विभिन्न अवसरों पर लिल्ली घोड़ी (घोड़वा नाच) का नाच प्रसिद्ध है। भारत सरकार द्वारा अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा में साहित्य और संस्कृति की परम्पराओं को अक्षुण्य बनाये रखने हेतु ''अन्तर्भारती सांस्कृतिक केन्द्र'' की स्थापना की गयी है। अन्तर्भारती मानव संसाधन मंत्रालय के

सहयोग से बना विश्वविद्यालय का एक स्वायत्त सांस्कृतिक केन्द्र है, जिसके संरक्षक विश्वविद्यालय के कुलपति हैं। यह केन्द्र दीक्षा, प्रेक्षा तथा वीक्षा विभागों में नृत्य, संगीत, नाटक तथा चित्रकला का प्रशिक्षण प्रदान करता है।

विश्लेषण –

बघेलखण्ड की प्राचीन कला और संस्कृति की झलक हमें यहाँ के लोकगीतों में परिलक्षित होती है। इस क्षेत्र में लगभग 88 प्रकार के लोकगीत विभिन्न संस्कारों के समय गाये जाते हैं। इन लोकगीतों में अनेक रागों के स्वरों का समावेश पाया जाता है। राग जौनपुरी, पीलू, जै–जै वंती, भोपाली, यमन, काफी, रागेश्री, विलागल, देश, आशावरी, खमाज, भीमपलासी, तिलककामोद एवं कोमल ऋषभ आशावरी जैसे रागों का स्वर बघेलखण्डी लोक संगीतों में पाये जाते हैं। याद्वेन्द प्रसाद शुक्ल ने लिखा है, कि बघेलखण्ड में जनेऊ संस्कार का गीत जिसे हम बरुआ कहते हैं, कि इसके गायन में विलंबित एक ताल बजता है तथा राग भोपाली के स्वर लगते हैं।

इसी प्रकार ब्याह संस्कार के गायन में ताल, तृताल विलंबित बजता है तथा राग रागेश्री के स्वर लगते हैं। बघेलखण्डी लोकगीतों में बजने वाले ताल क्रमशः दादरा, कहरवा, रूपक, दीपचंदी, एकताल विलंबित, तृमताल विलंबित बजते हैं। षोडस संस्कार के अलावा भी ऋतुओं के लोकगीत गाये जाते हैं। कुछ सामयिक लोकगीत भी गाये जाते हैं, जैसे–जेउनार गारी, पूड़ी (सोहारी) बेलने की गारी, लगभग 10 प्रकार से गायी जाती है। देवी पूजने के लिये जिस गैलिहाई कहते हैं, कई प्रकार से गाये जाते हैं। बसंत ऋतु में फगुआ लगभग 15 प्रकार के गाये जाते हैं। इसी तरह आदिवासी लोकगीत लगभग 20 प्रकार के गाये जाते हैं। चैती दो प्रकार की गायी जाती है। वर्षा ऋतु के लगभग 16 प्रकार के लोकगीत गाये जाते हैं। विरहा, लोरी, कथागीत जिसे हम सरमन गीत कहते हैं, ददरिया, भोला प्रकार के दो प्रकार के महिला एवं पुरुष स्वरों में अलग–अलग गाये जाते हैं। इसके अलावा लगभग 7–8 प्रकार के लोक भजन गाये जाते हैं। भूषण म्यूजिकल ग्रुप एण्ड ट्रेनिंग सेण्टर के व्यवस्थापक श्री शशि भूषण पाण्डेय ने इस क्षेत्र में गाये जाने वाले कुछ लोकगीत संकलित किये हैं, जो यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं –

(1) सोहर (मनौती) :–

बहू के गर्भ का प्रगट होना ही परिवार वालों के लिये खुशी का माहौल लाता है। परिवार के सभी सदस्य पुत्र प्राप्ति की मनोकामना (मनौती) अपने–अपने ढंग से करते हैं। इस मनौती में ननद का विशेष महत्व होता है, वह भाभी से कहती है, कि यदि तुम्हारे पुत्र होगा, तो मैं तुमसे सोने की तगड़ी लूँगी, चुनरी लूँगी आदि–आदि –

ननदि भउजी मिलि बइठीं,
त एकमति कीन्हिनि हो,
भउजी जउ तोर होइहंइ नंदलाल,
सोनन तगड़ी लेबइ हो।
ननदी तुहइ मोरी ननदी, मोरी सब कुछ हो,
ननदी तोहरा बचन फुरि होते, तगड़िया दइ देबइ हो।।

(2) सोहर (प्रसवपूर्व) :–

बहू पहली बार माँ बनने वाली है। उसे रह–रह कर प्रसव पीड़ा हो रही है। बहू सकुचाते हुये सोचती है कि किसको पुकारूँ। सास ओसारे में सो रही है, ननद कमरे में सोई है और पतिदेव रंगमहल में सोये हैं। बहू सबको उठाती है, मगर कोई नहीं जागता। सुबह पुत्र पैदा होता है। सास सोहर गाती है, ननद बाजे बजाती है और पति पुत्र जन्म कि खुशी में दान लुटाते हैं–

पहिलइ पेट पहिलउठी बहुला बड़ी लेल्हिर हो,
आबा रमति–गमति आबइ पीर मैं केहि गोहराइउ हो।
सासु मेरी सोबति ओसरबा,

ननदि गज ओबरिउ हो,
आबा प्रभु सोमइ रंगी महिलया, मैं केहि गोहराइउ हो।।

(3) सोहर (नेग) :–

नेग सोहर अर्थात् पुरस्कार लाने के लिये भाभी अपने ननद को खुशखबरी भेजती है कि मेरी कोख से लल्ला पैदा हुआ है, आ जाओ, किन्तु हमारे यहाँ रिवाज है, सोने का चूड़ा लाने का, आप चाँदी का चूड़ा मत ले आना। खद्दर का कपड़ा भी मत लाना, क्योंकि यहाँ तो रेशम के कपड़े का रिवाज या चलन है।

हमरे त भये नंदलाल री, चली आबा ननदिया,
चाँदी का चूड़ा न लाए मोरी ननदी।
हमरे त सोने का रिवाज री, चली आबा ननदिया,
चाँदी का चूड़ा न लाए मोरी ननदी।

(4) बँधाव गीत :–

बच्चा जन्म लेने कि खबर जब आस–पड़ोस या पूरे गाँव व दूर–दराज रहने वाले नात–रिश्तेदार को मिलती है, तो सब लोग बधाई देने के लिये आ जाते हैं। घन–आँगन में स्त्री–पुरुष बड़े हर्ष से बधाई दे रहे हैं, मानो नन्दोत्सव मनाया जा रहा हो–

नन्द के घर आई बधाव रानी, नन्द के घर आई,
घर बाजत–बजति बँधइयाँ।
बजत बँधइया साथ सहनइयाँ, गोकुल केर रहइया,
बँधाव रानी, नन्द के घर आई।।

(5) कुँआ पूजन (बरहौं) :–

बच्चा जन्म के बारह दिन बाद प्रसविनी, सिर पर कलश रखकर कुँआ पूजन करने जाती है, जहाँ पर महिलाएं गीत गाती हैं–

जल भरौं हिलोर–हिलोर रेशम कै डोरी,
रेशम डोरी जब निक लागै, जब सोने घइलना होय।
सोने घइलना तब निक लागै, जब रूपे–गोढ़रिया होय,
रूपे गोढ़रिया तब निक लागै, जब कोरा ललना होय।।

कुँआ पूजने के बाद प्रसविनी जब घर आती है, तब देवर नेग (पुरस्कार) लेकर भाभी के सिर से कलश उतारता है, तब प्रसविनी घर के अन्दर प्रवेश करती है।

(6) बरुआ (व्रतबन्ध या जनेऊ) गीत :–

बरहौं संस्कार के उपरान्त बच्चे का नामकरण संस्कार और फिर तीसरे वर्ष मुण्डन संस्कार भी किया जाता है। इन संस्कार में परिवार के ही लोग सम्मिलित होते हैं, किन्तु बालक जब 8–12 वर्ष का होता है, तब उसका एक महत्वपूर्ण संस्कार किया जाता है, जिसे बरुआ संस्कार कहा जाता है। इस संस्कार में आस–पड़ोस एवं नात–रिश्तेदार सम्मिलित होकर बालक को भिक्षा देते हैं, जिसे भीख पड़ने का गीत कहते हैं–

ऊँच ओसरबा नवइ घर जहाँ खम्भ कुंदेरिउ हो,
ओही ओढ़कि बइठी आजी, उत भीख संभारइ ले।
ठुमकि–ठुमकि पगु ढारइ उत मड़ये पहुंचि गई हो,
एक पग ढारइ ओसरबा, त दूसर अंगनबउ हो।।

यह गीत अति बिलम्बित लय में गाया जाता है, जो लयबद्ध हैं, तालबद्ध नहीं होता है।

(7) बरुआ रिसाई गीत :–

बालक जब अपनी इच्छानुसार अपने परिवारवालों से भिक्षा माँगता है, तो परिवार वाले उसकी इच्छापूर्ति नहीं करते, तभी लड़का रिसाय (गुस्सा) होकर जाने लगता है। परिवार के सभी लोग मनाते हैं किन्तु बालक मानता नहीं है, अन्त में बालक के मामा–मामी मनाने जाते हैं और बालक की इच्छानुसार भिक्षा देने की बात मानकर उसको वापस लाते हैं, उसी पर गीत–

प्रान पियारे ललनमा हो परदेश न जइहां,
खाइ का माँगे लाला पेड़ा मिठाइयाँ।
घूँटइ का कंचन गेडुआ हो, परदेश न जइहां,
रचैका माँगे खैरा–सुपरिया।।

(8) माटी मागर (बरुआ/विवाह) :–

बरुआ संस्कार/विवाह के पहले माटी मागर होता है, जिसमें सभी महिलाएं पूजन की सामग्री कलश के साथ–साथ मिट्टी खोदने के औजार, टोकरी, लेकर जाती हैं और गाती हैं–

शिव पूजन कह गलिया बताए चला,
काहे म बेल पत्र काहे म अक्षत।
केकरेन मथवा चढ़उबइ बताए चला,
शिव पूजन कह गलिया बताए चला।।

(9) माटी खोदने का गीत :–

महिलाएं जब गाँव के पास तालाब से माटी खोदने जाती हैं, तो धरती माँ की पूजा अर्चना कर माटी खोदती हैं, अन्य महिलाएं गीत गाती हैं–

माटी दलामल होइ, हरियरिन दुबियउ हो,
घुटिहाई ओनहिराम का घोड़ा, दुगिया चरि लेइही हो।।
घर वापस आकर, पाँच से नौ कन्या का पूजन कर,
सभी को गुड़, चना और तेल दिया जाता है।

(10) मड़वा गीत :–

माटी मागर के दूसरे दिन, मड़वा छाया जाता है, जिसमें पाँच बाँस (हरियर) गाड़ा जाता है, चारों दिशाओं में चार बाँस गाड़े जाते हैं, एक बाँस चारों के मध्य, एक बाँस जो अन्य बाँसों से लम्बा होता है, इस बाँस के साथ आम की लकड़ी और गूलर की लकड़ी पत्ते सहित गाड़े जाते हैं, और गीत गाया जाता है–

अनइल बन से कलई मगामैं, बलगिबंद्रहि से बाँस,
पनमा अरग दरके मड़वा छबाइन, मोतियन चौक पुराइ,
ऊपर दुंरइ दुनउ लाले परेउना, खाले रानी–रनिमास,
ओनहिराम केर आँही दुनउ लाले परेउना,
दुलहिन देई करे रानी–रनिमास।।

(11) मंत्री पूजन :–

मड़वा गाड़ने के उपरान्त पंडित द्वारा मंत्री पूजन अर्थात् परिवार के कुल देवी–देवता के साथ समस्त देवताओं का आह्वान किया जाता है। इसमें कलश, माटी मागर से लाई गई मिट्टी जिससे पाँच चूल्हे बनाकर रखे जाते हैं, जिसका उपयोग लावा भूँजने तथा अन्य कार्यों को करने के लिये किया जाता है, पूजा के दौरान गीत होता है–

आजु कइ बिधिया सबइ कोउ पामै हो,
तखत बइठे राजा दशरथ हुलसइ हो,
हुलसि–हुलसि राजा पटना लुटामै हो,

मचियन बइठी कोसिला रानी हुलसइ हो,
हुलसि–हुलसि रानी आरती उतारइ हो,
अवधपुरी कइ सब सखियाँ हुलसइ हो,
हुलसि–हुलसि सखि मंगल गामैं हो,
बिन्द्रहिवन के मेघा जो हुलसइ,
हुलसि–हुलसि जल बरसइ हो।।

(12) दुआर–चार :–

लड़का अब युवा हो गया है, उसका विवाह तय हो गया है, शुभ तिथि व तारीख को वर के समस्त रिश्तेदार बारात लेकर कन्या के घर पहुंचते हैं। गौधुली बेला में बारात कन्या के घर के दुआर पर पहुंचती है, जहाँ कन्या के पिता–भाई आदि सगे–संबंधी प्रथम स्वागत इत्र छिड़क कर और पुष्पों की माला पहनाकर बरातियों का स्वागत कर रहे हैं, दूसरी महिलाएं भी बरातियों का स्वागत अपने चटपटी गीतों की माला से करती हैं–

कहन केर बरतिया रे सब करियइ करिया,
कहना केर देखइया रे सब गोरियइ–गोरिया।
इहना केर बरतिया रे सब करियइ करिया,
रीवा केर देखइया रे सब गोरियइ–गोरिय।।

(13) चढ़ाव :–

दुआरचार के पश्चात् वर पक्ष द्वारा कन्या के लिये चढ़ाव चढ़ाया जाता है, जिसमें कन्या मण्डप के नीचे बैठी होती है और वर का बड़ा भाई कन्या की आँचल में सोलह श्रृंगार की समस्त सामग्री डालता है।

आज श्री सीता जी का चढ़त चढ़ाव,
अरे मण्डप के नीचे जी।
आज श्री सीता जी को बेन्दी पहनाव,
अरे मण्डप के नीचे जी।।

(14) गारी (सोहारी बेलन) बेलनहार :–

बारात आने के दिन कन्या के घर के लोग तथा रिश्तेदार बरातियों के खान–पान की व्यवस्था में लगे हैं। पुरुष वर्ग जहाँ तरह–तरह के पकवान बना रहे हैं, वहीं महिलाएं आँगन में बैठी, आटा गूँथ रहीं हैं, तो कोई सोहारी बेल रहीं हैं, साथ ही साथ महिलाएं अपने सास और जेठानियों पर कटाक्ष करती हैं, तो कोई आस–पड़ोस कि बातों पर चुटकी ले रहीं हैं और फिर कभी एक साथ गीत भी गाती हैं, जिसे सोहारी बेलन कि गारी कहते हैं–

एजी खेलत रहेन बारू–रेत,
मुदरिया मोरी उहैं रे गिरी।
एजी ससुरा जगामैं आधी रात,
ससुइया गारी देत उठी।।

(15) गारी (जेवनारि) :–

चढ़ाव के बाद समस्त बरातियों को भोजन कराया जाता है, जहाँ स्वादिष्ट भोजन पुरुषों द्वारा परोसा जा रहा है। महिलाएं घर के झरोखे से स्वाद भरी गारी को पकवान के रूप में परोसती हैं। दोनों पक्ष मनुहार (हंसी–मजाक) करते हैं–

बोली–बोली बरा की डार काली कोयलिया,
आजे से बाजे से तम्बू नगारे से।
खाँय का माँगें दूध भात पियैं का मागैं पप्पा,
एहो फलाने राम के दद्दा तनी नाक में डरा लत्ता।।

(16) बनरा :–

मण्डप के नीचे जब वर और कन्या आते हैं, तो सभी महिलाएं वर की सुन्दरता का बखान करती हैं, उसके परिधानों का वर्णन करती हैं–

दशरथ राज दुलारे नवल बनरा बनि आयो रे,
नबल बनरा बनि आयो रे, सुधर बनरा बनि आयो रे।

(17) विवाह गीत :–

यह अति विलम्बित लय में गाया जाता है, इसमें ताल नहीं बजता। महिलाएं इस गीत के बोलों को लम्बा टेर देते हुये गाती हैं–

काहे का सेयेउ मैं हरदी का बिरबा हो,
काहे का मैथ मजीर,
काहे का सेयेउ मैं धेरिया ओथहि देई,
कच्चइ दुधवा पियाइ
पियरी का सेयेउ मैं हरदी का बिरबा,
चुनरी का मैथ मंजीर,
धरम का सेयेउ धोरिया ओथहि देई,
कच्चइ दुधवा पियाइ।

(18) विवाह गीत (पउपखरी) :–

विवाह का यह महत्वपूर्ण संस्कार है, पाँव का पूजन जिसमें सर्वप्रथम माता–पिता कन्या का दान करते हैं, जो कि बहुत ही कारूणिक दृश्य होता है, क्योंकि उसे पालने–पोषने के बाद आज उस दिल के टुकड़े को दान में दे रहा है, अश्रुपूरित नयनों से। माता–पिता अपनी पूरी खुशियाँ वर और वधू पर आशीर्वाद के रूप में दोनों के पाँव पखारते (पाँव धोना) है। यह क्रिया तीन बार की जाती है। इस संस्कार के बाद माता–पिता अपनी बेटी का भाग्य दूसरे वर के साथ जोड़ देते हैं। दोनों को सुखी रहने का आशीर्वाद देते हैं। माता–पिता के बाद परिवार के सभी लोग पाँव पूजन करते हैं।

थारी के कांबइ गेंडुआ रे कांपइ,
कांपइ कुसा केरि डोर,
मडये तर कांपइ बपबा ओनहिराम,
देत कुमारी का दान,
अब नहि हथवा सकेले मोरे बाबू,
हो होई धरम केरि जून,
अच्छी–अच्छी कपिला पखारे मोरे बाबू हो,
होई गइ धरम केरि जून।।

(19) सोहाग :–

मण्डप के नीचे बैठी कन्या को सोहागिन, बुआ अपने माँग पर लगे सिन्दूर को कन्या की माँग पर लगाती है, यह प्रक्रिया पर्दे के अन्दर की जाती है। मण्डप के आस–पास बैठी महिलाएं सोहाग गीत गाती हैं–

लाली–लाली डोरिया जड़े हीरा मोतियाँ,
जड़े हीरा मोतियाँ।
पै लपकत आवे रे ओहराम रानी के सोहगवा।

(20) सिन्दूर दान :–

वर कन्या की माँग में सात बार सिन्दूर भरता है, जो अखण्ड सौभाग्यवती का प्रतीक होता है–

पुरब दिशा से उठी हइ बदरिया,
पछिम गरजत जाइ राजा के सोहगबा,
बिनतिन बंइठी हइं धेरिया ओनहिराम,
सुना मेघ विनती हमार, रानी के सोहगबा,
तनि एक बुँदिया छिमा हो करा बदरी,
पइ सिन्दुरा परइ मोरि माँग, रानी के सोहगबा,
अब कइसे परिखेउ ओनहिराम कइ धेरिया,
पइ घुमड़ि कइ लगि गे अषाढ़ रानी के सोहगबा।।

(21) भमरी :–

भमरी (सात फेरे) वर–कन्या दोनों समस्त नात–रिश्तेदारों और अग्नि को साक्षी मानकर सात फेरे अग्नि के चारों ओर लगाते हैं, जिसमें प्रथम से चार फेरे तक लड़की वर के आगे रहती है, शेष तीन फेरे में वर–कन्या के आगे होता है। फेरे के बाद आचार्य/पंडित वर–कन्या को एक–दूसरे को जीवन पर्यन्त पालन करने हेतु धार्मिक, सामाजिक और मर्यादित जीवन की शपथ दिलाते हैं। वर–कन्या एक–दूसरे की बातों को स्वीकार कर, नये जीवन के सृजन के लिये तैयार हो जाते हैं। परिवार के सभी सदस्य अक्षत या जौ कि वर्षा वर–वधू पर कर, आशीर्वाद प्रदान करते हैं–

धिया मोरि भई हइ पराई त जियरा दुखित भये हो,
पहिली भमरि फिरि आयेन, अबइ आजा तोहरिन हो,
दुसरी भमरि फिरि आयेन, अबइ बाबू तोहरिन हो,
तिसरी भमरि फिरि आयेन, अबइ माया तोहरिन हो,
चउथी भमरि फिरि आयेन, अबइ काका तोहरिन हो,
पंचई भमरि फिरि आयेन, अबइ भइया तोहरिन हो,
छठई भमरि फिरि आयेन, अबइ भउजी तोहरिन हो,
संतई भमरि फिरि आयेन, मैं अब भई पराइउ हो।।

(22) बाती मिलाई :–

विवाह के उपरान्त वर–वधू को महिलाएं कोहबर में ले जाती हैं, जहाँ महिलाएं वर से मनुहार (हँसी–मजाक) करती हैं। वर एक दिये में दो बाती (जलती हुई) को एक कर देता है, जिससे दोनों बाती मिलकर एक लौ से कमरे को रोशन कर देती है अर्थात् अब एक साथ मिलकर दोनों परिवार को रोशन करेंगे, एक साथ सुख–दुख सहेंगे। यही संदेश बाती मिलाई से मिलता है। महिलाएं बाती मिलाई के समय मनुहार कर गीत गाती हैं–

देखा दुलहे एक चिरई बनी हई,
तोहार माया मोर बाबू जोड़ी बने हई।
देखा दुलहे एक चिरइ बनी हई,
तोहार काकी मोर काका जोड़ी बने हई।।

(23) अँजुरी गीत :–

अँजुरी गीत गमना के समय गाया जाता है, किन्तु वर्तमान समय में शादी और गमना एक साथ ही किया जाने लगा है। इसमें वर का हाथ नीचे और कन्या का हाथ ऊपर होता है, दोनों की हथेलियाँ खुली होती हैं। हथेली में पण्डित हल्दी लगा चावल और चने की दाल कन्या के हाथ में डालता है, कन्या और वर उस डाले हुये चावल और दाल (खिचड़ी) को हथेली के बीच से नीचे गिरा देते हैं, यह प्रक्रिया सात बार होती है, जिसे अँजुरी कहा जाता है, महिलाएं गीत भी गाती हैं–

बगिया म फूली हइ चमेमी,
त बगिया सुहामन लागइ हो,
चउके म बइठी धेरिया ओनिह देई,
चउक रयामन लागइ हो,
मलिया जउ हाथ पसारइ इहइ, फूल लेवइ हो,
दुलहे जो हाथ पसारइ, इहइ धन लेबइ हो।

(24) कलेबा गारी :–

सुबह बरात बिदाई के पहले वर को कलेबा कराया जाता है, जिसमें हँसी–मजाक के साथ वर–कन्या पक्ष उपस्थित रहते हैं। वर और वर के हम उम्र साथी, भाई आदि कलेबा करते हैं–

सूखा कलेउना काहे खाये मोर ललना,
आपनि माया कंदुआ धर धरतेउ,
पेड़ा मिठाई लइ खाते मोर ललना,
सूख कलेउना काहे खाये मोर ललना।।

(25) विदाई गीत :–

अँजुरी के पश्चात् रात भर कई रस्मों को सम्पन्न किया जाता है। प्रातः काल वर को और उनके साथियों को कलेबा कराया जाता है और फिर वह घड़ी आ जाती है, जब सभी लोग एक करुण वियोग की ओर बढ़ते हुये अश्रुपूरित आँखों से अपनी लाड़ली को, सृष्टि के बनाये हुये नियमों के अनुसार, अपनी दुआओं के साथ विदा करते हैं–

जानकी जी आज विदा रे भई,
तकथा मां बइठैं पिता उनके रोवैं।
रोवैं जनकपुर बासी बिदारे भई,
बांगा रे रोवैं बगइचा रे रोवैं।।

विदाई के समय, करुणामय वातावरण हो जाता है, जिससे यह गीत कण्ठ से बाहर निकालने में कठिनाई होती है।

(26) परछन :–

कन्या के घर से बिदा होकर जब वर–वधू को अपने घर लाता है, तो घर की समस्त महिलाएं द्वार पर परछन गीत गाती हैं और वर की माँ, (कन्या की सास) परछन करती हैं–

बियाहि लाये रघुबर जानकी का,
अपने का लाये राजा हाथी अऊ घोड़ा,
धिरे किहे परछनिया हो, मोर जूना लरद में,
पहिली परछनिया सासु रानी आई,
सोनेन कलशा लइ आई हो, धिरे किहे परछनिया हो,
मोर जूना लरद में।।

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः रीवा राज्य के शासकों का कला प्रेम एवं उनके सांगीतिक योगदान के साक्ष्य प्राचीन काल से ही मिलते हैं। इसी कालक्रम में विन्ध्यप्रदेश का बघेलखण्ड विभाजन एवं क्षेत्रीय/जनपदीय भाषा 'बघेली' भूतपूर्व बघेलों के शासन की यादगार धरोहर है, जो आज भी विन्ध्य क्षेत्र में प्रचलित है। इस तरह बघेली लोक संगीत में लालित्य है, लोच है, अपनापन और प्रणाम है। बघेली लोक संगीत की दिशा में बघेली विकास आन्दोलन द्वारा प्रारम्भ किये गये प्रशंसनीय हैं।

संदर्भ –

1. गुरुरामप्यारे अग्निहोत्री – रीवा राज्य का इतिहास, मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद, भोपाल
2. डॉ. एस. अखिलेश – रीवा दर्शन, गायत्री पब्लिकेशन्स, रीवा, संस्करण 2013
3. रीवा राज्य का इतिहास, गायत्री पब्लिकेशन एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, म.प्र. संस्करण 2006–07
4. मध्यप्रदेश संदेश, शासन का मासिक प्रकाशन, मार्च 2018, अंक 3, वर्ष 114